ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रबुद्ध जीवन

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार

संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा (बिहार)

सम्प्रेषक- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

वर्षः ०३ अंकः ११

'मौन की महिमा

आज का मनुष्य अधिक बोलता है, कम सुनता है और बहुत कम समझता है। शब्दों की अधिकता ने उसके जीवन से शांति छीन ली है। वह यह भूल गया है कि मौन भी एक भाषा है- जो बिना शब्दों के बहुत कुछ कह देती है। जहाँ वाणी असफल होती है, वहाँ मौन प्रभावशाली बन जाता है।

मौन कायरता नहीं, वरन् आत्मबल का चिन्ह है। जो हर बात का उत्तर शब्दों से देने लगता है, वह अपने भीतर की शक्ति को क्षीण कर लेता है। क्रोध के समय मौन रह जाना, अपमान में संयम रखना और विवाद में चुप रहना- ये सब आत्म-विजय के लक्षण हैं। मौन मन को एकाग्र करता है और बुद्धि को शुद्ध बनाता है।

ऋषि-मुनियों ने मौन को तप का अंग माना है, क्योंकि मौन से ही मन भीतर की ओर मुड़ता है। जब शब्द थमते हैं, तब विवेक जागता है। अनावश्यक बोलना ऊर्जा का अपव्यय है, जबकि मौन ऊर्जा का संचय करता है। जीवन में जितना अधिक मौन होगा, उतनी ही गहराई होगी। मनुष्य को चाहिए कि वह मौन को अपनाए, उसे साधे। मौन से जन्मी वाणी ही सार्थक होती है और वही जीवन को दिशा देने में समर्थ होती है।

हृदय से हृदय तक

यदि कोई चेतना आज भी मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने का साहस उसके हृदय को देती है, तो वह भगवान बुद्ध की करुणा है। मृत्यु की महानता में रचे हुए जीवन को देखकर आज भी बुद्ध हमारे बीच उपस्थित प्रतीत होते हैं। उनकी दृष्टि में जीवन पलायन नहीं, जागरण है; और करुणा दुर्बलता नहीं, बल्कि निर्भयता की पराकाष्ठा है। आज के विखंडित, विषम और संवेदनहीन होते समय में बुद्ध की यह करुणा ही संजीवनी बनकर उभरती है।

आज का मनुष्य सब कुछ होते हुए भी भीतर से रिक्त है। लालच, लोभ और क्षण-भंगुर सुखों की दौड़ में वह इतना उलझ गया है कि उसके आसपास घट रही पीड़ा भी उसे स्पर्श नहीं कर पाती। संवेदनाएँ बह रही हैं, पर संवेदनशीलता का ठहराव नहीं है। प्रश्न उठता है- भगवान बुद्ध के पगचिह्नों पर आज कौन चलेगा? और उत्तर मौन में खो जाता है, क्योंकि उत्तर देने वाली स्थिर बुद्धि ही आज दुर्लभ हो गई है।

बुद्ध जिस बुद्धि की बात करते हैं, वह चंचल नहीं, करुणामय है। वह कूटनीति में नहीं, समभाव में स्थित होती है। आज हम जिस बुद्धि का प्रयोग कर रहे हैं, वह अधिकतर स्वार्थ-सहिष्णु है। वह न दोषी को पहचान पा रही है, न निर्दोष को। परिणामस्वरूप निर्दोष प्राणों का क्षय हो रहा है और बुद्धि केवल दर्शक बनी हुई है। यह वही स्थिति है, जिसे बुद्ध ने ढाई हजार वर्ष पहले देख लिया था।

भगवान बुद्ध ने स्पष्ट कहा था कि बुद्धि के दो ही मार्ग हैं- कुटिलता या करुणा। कुटिल बुद्धि मनुष्य को शोषक बनाती है, जबकि शुद्ध और करुण बुद्धि मनुष्य को बुद्धत्व की ओर ले जाती है। करुणा जब मोह और अहं से मुक्त हो जाती है, तब उसमें मानवता प्रकट होती है। इसी शुद्धि के लिए बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग का विज्ञान दिया।

सम्यक दृष्टि से आरम्भ होने वाली यह यात्रा हमें सिखाती है कि जीवन विलास के लिए नहीं, बल्कि दुख-मुक्ति के लिए है। सम्यक वाणी मनुष्य को शीतल बनाती है, सम्यक कर्म और सम्यक आजीविका जीवन को पवित्र करते हैं। सम्यक प्रयास और सम्यक स्मृति के द्वारा चेतना जाग्रत होती है और अंततः सम्यक समाधि में बुद्धि बुद्धत्व में प्रतिष्ठित हो जाती है।

ये आठों चरण केवल साधना-पद्धति नहीं, बल्कि जीवन को पुनः मानवीय बनाने के मार्ग हैं। जैसे-जैसे बुद्धि शुद्ध होती है, वैसे-वैसे संवेदना जागती है और जीवन करुणा से भर उठता है। बुद्ध जयंती का यह पावन अवसर हमें स्मरण कराता है कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता किसी नए सिद्धांत की नहीं, बल्कि उसी पुरातन संवेदना संजीवनी के पुनः सेवन की है- जो हम सभी के हृदयों तक बहकर समूची मानवता को जीवनदान दे सके।

- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

वर्तमान युग की आपातकालीन आवश्यकता

आज के विश्वव्यापी संकट के समाधान की आपातकालीन आवश्यकता है अध्यात्म और विज्ञान का गठबन्धन जिससे न केवल अणुयुद्धों के भावी विनाश को रोका जा सकता है अपितु विज्ञान के संहारक बमों के प्रयोग की मानवद्रोही मानसिकता पर भी विरामचिह्न लगाया जा सकता है । विज्ञान हमारी बहिर्प्रवृत्ति यानि बाहर के संसार को सजाने के लिए आवश्यक है और अध्यात्म हमारी आन्तरिक प्रवृत्ति यानि अन्दर के संसार को सजाने के लिए आवश्यक है । जबतक अन्दर का संसार नहीं सजेगा बाहर का संसार सजाकर भी हम क्या पा लेंगे \ अगर रावण के शरीर को खूब सजा दिया जाए तो क्या वह अन्दर से रावण नहीं रहेगा, अगर राम को बाहर से रावण की छवि का बना दिया जाए तो क्या वे अन्दर से भी रावण बने रह सकते हैं प्रश्न यह उठता है ।

जिस तरह मन के अन्दर की दुष्टता को तीर्थों में स्नान करके शुद्ध नहीं किया जा सकता जैसे सौ बार भी मदिरा से भरे हुए घड़े को निर्मल जल से धोया जाए तो वह मदिरा ही रहेगा, निर्मल जल नहीं बनेगा यानि हम बाहर से किसी के स्वभाव को नहीं बदल सकते । स्वभाव अन्दर की चीज है इसलिए इसे अन्दर से ही बदल सकते हैं फिर विज्ञान और अध्यात्म में झगड़े की बात ही कहाँ है? विज्ञान सासांरिक सुख-सुविधाओं का प्रबन्ध करेगा और अध्यात्म उन सुख-सुविधाओं का विवेकपूर्ण उपयोग करना सिखाएगा ।

आज जितनी भी तबाहियाँ मच रही हैं मानव मन के विषैलेपन के कारण ही मच रही हैं चाहे वह अमेरिका और ईरान का युद्ध हो, चाहे इजराईल और लेबनान का युद्ध हो, चाहे रूस और यूक्रेन का युद्ध हो, चाहे देश या विश्व के स्तर पर किसी प्रकार का युद्ध हो सबमें मानवी मन की वहशियत और दरिन्दगी ही दिखाई देती है जिसमें विज्ञान के उपकरणों से ही आतंक फैलाकर निरपराधों के रक्त से धरती को लाल किया जाता रहा है यानि विज्ञान सद्विचारी और दुर्विचारी के हाथों की कठपुतली बनने से स्वयं को रोक नहीं सकता क्योंकि विज्ञान तक सबकी पहुँच है । विज्ञान पात्र या कुपात्र नहीं देखता तभी उसके उपकरणों के द्वारा ऐसे हादसे होते रहे हैं परन्तु अध्यात्म किसी के हाथ की कठपुतली नहीं बन सकता । वहाँ तो कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है । ईश्वर या गुरु सत्ता ठोक-बजाकर देख लेती है कि क्या सामने वाला सत्पात्र है । वहाँ तो संबंध भी नहीं देखा जाता । तभी तो आत्म ज्ञान के लिए लिखा है कि "नापुत्राय न अशिष्याय दातव्यम्' अर्थात् न तो कुपुत्र को, न ही अशिष्य को इसे देना चाहिए यह सत्पात्र को ही देना चाहिए । तभी एक आध्यात्मिक सन्त जो जीवन और मृत्यु के रहस्यों से अवगत होते हैं, उसकी कुछेक शक्तियों से भी युक्त होते हैं फिर भी किसी के रोने-चीखने से वह ईश्वर के विधान में कोई हस्तक्षेप नहीं करते ।

अध्यात्म विषैले मानव मन की शोधन प्रक्रिया है । विज्ञान के यन्त्रों और उपकरणों का सार्थक उपयोग एक आध्यात्मिक ही कर सकता है । वह आध्यात्मिक जिसके विचारों में पावनता हो, जिसके कर्मों में शुद्धता हो, जो मानवता का हितैषी हो, न कि मानवता को डँसनेवाला हो । मानव को मानवता पर कदम रखवाने के लिए, अपने अविष्कारों को दुरूपयोग से बचाने के लिए विज्ञान और वैज्ञानिकों को अध्यात्म के साथ गठबन्धन की परमोच्च आवश्यकता है । जिस दिन विज्ञान और अध्यात्म का गठबन्धन तन-मन-धन से मानव मन कर लेगा, उसी दिन उसी समय से इस धरती के सर्वनाश की कलंक कथाओं की जगह इसके सुमंगल का भाग्योदय शुरु हो जाएगा । मानवता की सुबह दानवता पर हस्ताक्षर से नहीं अपितु देवत्व के उदय से ही सम्भव है और उस देवत्व के उदय का स्वर्णिम हस्ताक्षर केवल और केवल अध्यात्म है तो बढ चलें हम सभी विज्ञान और अध्यात्म के गठबन्धन की ओर और ले आएँ इस विश्व में नवयुग की नवल भोर ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **हमारे अंदर से अज्ञान रूपी अंधकार हटे, ज्ञान का प्रकाश स्थापित हो, क्योंकि ज्ञान ही सभी दुखों से हमें मुक्त करता है।**
- **दुनिया में दुःख के तीन कारण हैं -अज्ञान, असक्ति और अभाव।**
- **असक्ति और अभाव भी अज्ञान के कारण ही उत्पन्न होते हैं।**
- **महर्षि पतंजलि ने कहा कि पाँच क्लेश हैं दुनिया में- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश।**
- **अविद्या यानि अज्ञान, अस्मिता यानि अहंकार। अज्ञान होगा तो अहंकार होगा कि मैंने ये किया, मैंने वो किया और जब अहंकार होता है तो मैं मेरा- तू तेरा होता है, राग और द्वेष होता है और फिर जो चीज मेरा है वह मेरा बना रहे को, फिर वही बनता है अभिनिवेश यानि मृत्यु का भय। लेकिन मृत्यु तो अज्ञात है मृत्यु को कोई जानता है क्या?नहीं जानता । दरअसल छूटने का भय है ये छूट जाएगा । पांचों क्लेशों को दूर करने के लिए ज्ञान की जरूरत है।**
- **दीक्षा यानि आरंभ, कन्वोकेशन । ज्ञान दीक्षा यानि इंडक्शन, इनड्यूस करना, घुसाना, प्रवेश दिलाना। छोटी-छोटी बातें बताना, किस तरह से रहना है, किस तरह से पढ़ाई करनी है, वहां के अनुशासन-नियम -कानून को जानना, उसे आत्मसात करना। चाहे विश्वविद्यालय हो या मेडिकल कॉलेज हो, इंजीनियरिंग कॉलेज हो। जहां आपको प्रवेश मिला उस संस्थान के बारे में आप जानें और संस्थान भी आपको जाने, इसे ही कहते हैं इंडक्शन प्रोग्राम, ज्ञान दीक्षा यही है।**
- **किसी भी साधना में संकल्प पूर्वक, लक्ष्य बनाकर प्रवेश करना ज्ञान दीक्षा है।**
- **दीक्षा मतलब दक्ष करना, कुशल बनाना। आज नॉलेज बेस्ड एग्जाम की ही बात नहीं स्किल बेस्ड एग्जाम की बात हो रही है, सिर्फ किताबी ज्ञान की बातें नहीं हो रही ।आप कितने कुशल हैं, अपने को कितना प्रेजेंटेबुल बना पाते हैं, वही व्यक्ति दुनिया में आगे बढ़ पाता है, सफल बन पाता है।**

जिज्ञासा

प्रश्न- यदि सभी इंसान के अन्दर भगवान होता है तो वो बुरा काम क्यों करते हैं ? दूसरों की हत्या क्यों करते हैं ? मॉस-मदिरा का सेवन क्यों करते हैं ? भगवान उसको रोकते क्यों नहीं हैं ?

उत्तर - भगवान रोकनेवाली चीज नहीं है । भगवान न रोकता है न कराता है । भगवान में क्रिया-शक्ति नहीं होती है, क्रिया का कार्यक्रम भगवान नहीं करता है । आदमी के कर्म, गुण और वृत्तियों के अनुसार होते हैं । गुण और वृत्ति यानि मनुष्य की प्रकृति वैसा ही काम कराती है । गुण जैसा वृत्ति जैसी, मनुष्य वैसा काम करता है । अगर पुण्य और वृत्ति का शोधन कर लिया जाए तो शुभ कार्य और गुण और वृत्ति अशुद्ध है तो अशुभ कार्य होगा । आप कहते हैं भगवान इंसान के अन्दर है तो कैसे ये संभव है ? देखिए, भगवान खाली इंसान के अन्दर ही नहीं, शैतान के अन्दर भी है, वृक्ष-वनस्पति सभी में है, भगवान पेड.-पौधे में भी है । भगवान धरती में भी है, भगवान आसमान में भी है, भगवान निर्जीव पदार्थ में भी है । भगवान सब जगह है । प्रह्लाद ने यही तो कहा भगवान इस खम्भे में भी है । बात प्रकट होने की है ? सब लोग उसको प्रकट नहीं कर पाते । मॉस-मदिरा तमोगुणी वृत्ति है, मिर्च-मसाला रजोगुणी खाएगा । हत्या कौन करेगा ? जब तमोगुणी को गुस्सा आएगा तो हत्या करेगा । तमस बढेगा तो अगले जन्म में सॉप बनेगा, काटते फिरेंगे सक्रिय सर्प बनकर।

प्रश्न- क्या हम ध्यान में परमात्मा से मिल सकते हैं ? या सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं ?

उत्तर - ध्यान यानि अन्तर्मुखी होना, अपने अन्दर जाना, पहले अपने आप से तो मिल लो परमात्मा से मिलना फिर हो ही जाएगा । एक और मूल बात है चाहे ध्यान में मिलो, चाहे ज्ञान में मिलो । परमेश्वर से मिलन में बाधा है आपके गुण और वृत्ति, ये अन्तर्मुखी होने नहीं देते । जबतक चिन्तन और दृष्टि में संसार है, बहिर्मुखी है तबतक मिलन नहीं है । विषयासक्ति, चाहत है, तबतक सम्भव नहीं है । तबतक भटकते रहोगे । संसार जब मन से गिर जाता है तब भगवान ही है, भगवान दूर थोड. ही है । रामकृष्ण परमहंस बात कर रहे थे अपने शिष्यों से, अंगोछा अपने मुँह पर डाल लिए, बोले - अच्छा बताओ, हम तुमसे कितने दूर हैं ? तो शिष्य बोले - आप तो पास ही बैठे हैं, बोले - दिखाई नहीं दे रहा न, घूँघट उठाया तो दिख गए । संसार जो है, भगवान का घूंघट है । आसक्ति, विषय - वासना, सांसारिकता ये घूँघट है । घूँघट हटा दो तो पास ही बैठा हुआ है । घूँघट हटाने की सामर्थ्य हो तो चेहरा दिखाई देगा । सामंजस्य मतलब योग, मिलन । घूंघट के पट खोल तुझे, पिया मिलेंगे।लेंगे मीरा का यह भजन है । पिया यानि परमेश्वर मिलेंगे । देखो तो भी अलग दृष्टि है । किस रूप से देख रहे हो ?

प्रश्न- भगवान से फेश टू फेश बात करने के लिए क्या किया जा सकता है ?

उत्तर - वही घूंघट के पट खोल तुझे पिया मिलेंगे । फेश टू फेश तब दिखाई देगा जब घूंघट उठेगी।

प्रश्न- साधना और ध्यान अंतर बताएं।

उत्तर - साधना का एक भाग है ध्यान । साधना है एक थाली और ध्यान है उसमें रखा एक डिश । थाली में दाल भी है, चावल भी है, रोटी भी है, खीर भी है, गुलाब जामुन भी है, रसमलाई भी है । साधना की थाली में जप भी है, कर्मकाण्ड

भी है, पूजा भी है, पाठ भी है, पंचोपचार, षोडशोपचार भी है और ध्यान भी है । साधना में सब है । साधना और ध्यान में अन्तर नहीं है, ध्यान साधना के अन्तर्गत है ।

प्रश्न- गायत्री मंत्र जैसा पवित्र, शक्तिशाली, सर्वश्रेष्ठ मंत्र रहते हुए भी भारत पतन - पराभव, दीन - हीन की स्थिति में क्यों गुजर रहा है ?

उत्तर - इसलिए कि भारत के लोगों ने गायत्री मंत्र के तत्त्वदर्शन को नहीं जाना । गायत्री मंत्र अपने आप में विमल विद्या है, जीवन जीने का ढॅंग है । मान लें कोई आदमी बर्फी बनाना जानता है, उसके पास बर्फी बनाने के मैकेनिज्म हैं । बर्फी के सारे गुण - दोष जानता है, उसमें कितनी कैलोरी है ? कितना फैट है, कितना विटामिन है ? वो क्या कर सकता है ? बर्फी पर ढेर सारे प्रयत्न कर दे सकता है लेकिन बर्फी का स्वाद तो वही आदमी पाएगा जो उसे खाएगा । गायत्री मंत्र जो खाएगा, पचाएगा, उसी को मिलेगा न गायत्री मंत्र का लाभ । बॉंकि को तो नहीं मिलेगा । व्याख्या तो बहुत लोग करते हैं तत्त्व दर्शन को अपना सकें तब न।

प्रश्न- उपासना को मानव जीवन की सर्वोपरि बुद्धिमत्ता क्यों माना गया है ?

उत्तर - उपासना - उप $ आसन, भगवान का आसन, फिर उप आसन अपना आसन यानि भगवान के समीप बैठना । दरअसल उपासना भगवान के पास बैठना, भगवान का सामीप्य अनुभव करना, गायत्री करते हुए एहसास करना, सूर्य का ध्यान करते हुए एहसास करना है, उपासना विचार प्रधान है पर भाव प्रधान ज्यादा है । जैसे मॉं - बेटे के साथ, पति - पत्नी के साथ, जहॉं प्रेम की प्रधानता होती है वहॉं मन निष्पन्द हो जाता है । मतलब प्रेम में वह खो जाता है क्षण भर के लिए । भावनाओं में खो जाता है तो जब प्रेम प्रगाढ होगा, भाव प्रगाढ होगा तो उपासना सधेगी और बुद्धिमत्ता सर्वोपरि ये है कि अगर नींव ही बदल दें तो मकान ही बदल जाएगा । उपासना भाव शरीर, कारण शरीर की है तो विचार शरीर ठीक हो जाएगा । केन्द्र में परिवर्त्तन ले आएँ तो परिधि में परिवर्त्तन खुद ब खुद हो जाएगा । भाव ठीक तो आचार - व्यवहार स्वयं ही बदल जाएगा । उपासना जीवन के केन्द्र में परिवर्त्तन करती है, भाव में परिवर्त्तन करती है, कारण शरीर में परिवर्त्तन करती है । वह परिवर्त्तन पूरे परिवार में छा जाता है । इसलिए उपासना सर्वोपरि बुद्धिमत्ता है।

प्रश्न- सुखों की अपनी उपयोगिता है, पर जीवन में विपन्नता का क्या महत्त्व है ? क्या वह भी उपयोगी है ?

उत्तर - हॉं, बहुत बङा । सुख से ज्यादा दुःख यानि विपन्नता की उपयोगिता है । सुख आपको सुला देते हैं, आपकी चेतना सुप्तावस्था में पहुँच जाती है, दुःख जगा देता है, होश में ले आता है, मदहोशी खत्म करता है । कोई लेखक, कवि, पत्रकार कहता है अच्छा पैसा देगा तो हम ज्यादा अच्छा लिखेंगे, पर सच्चाई यही है कि ज्यादा पैसे वाला अच्छा नहीं लिखता । छोटे मोटे लेख की बात अलग है । जिन्होंने युगान्तकारी चिन्तन दिया, लेख दिया, चाहे प्रेमचन्द हों, मार्क्स हों, चाहे रूसो हों, चाहे कोई भी व्यक्ति हों वे दुःखों में रहे हैं, पीङा में रहे हैं । क्योंकि पीङा जो है चेतना में हेमरिंग पैदा करती है । जिसके पास दुःख नहीं है या कम है अगर उसको अपनी चेतना जगानी है तो वो व्यक्ति कृत्रिम दुःख पैदा करता है । उसी को तपश्चर्या कहते हैं । यानि जो तपश्चर्या है वह दुःख पैदा करने की विद्या है । तप जो है तपाता है । अगर सुख में साधना होती तो बुद्ध को घर नहीं छोड.ना पड.ता । महावीर को गृह त्याग नहीं करना पड.ता

। सम्पन्नता थी, सारे सुख में एकान्त में बैठते, पलंग पर ध्यान करते, उनको कौन डिस्टर्व करता ? पर नहीं संभव है । वो पीङा, वो मानसिक विकलता, भावनात्मक द्वंद्व, वो चेतना पर के आवरण को हटा देते हैं । जिस तरह सर्प की केंचुली होती है, उतरती है जो नया जीवन प्रदान करती है, नई चमक, नई ऊर्जा, सबकुछ नया । वैसे ही दुःख मन का मैल मिटा देता है । मन की केंचुली उतार देता है, चेतना की केंचुली उतार देता है । दुःखों की उपयोगिता इसलिए है । श्री अरविन्द ने सावित्री में लिखा है दुःख जो है प्रभु के हाथ का हथौङा है जिससे वह गढता है, आकार देता है । सुख से ज्यादा दुःख का महत्त्व है । लेकिन तभी महत्त्व है जब आप दुःख को सकारात्मक लें । यदि आप वैर में पड. गए, द्वेष में पड. गए तो सकारात्मक नहीं हैं । एक बात और अगर सुख और दुःख का सम्बन्ध नापना है तो दुःख तपश्चर्या है, त्याग करते हैं । उसी तरह सुख को भी आप सकारात्मक लेते हैं तो सुख के दिनों में योग करते हैं, सेवा करते हैं । दुःख में तप फलता है, तप अंकुरित होता है और सुख में योग पलता है, अंकुरित होता है । निर्भर करता है कि आप कैसे लेते हैं ? विपन्नता यानि विपदाओं से घिरे रहना । विपत से विपन्नता शब्द है।

प्रश्न- हाथ की रेखा क्या कहती है ?

उत्तर - संस्कारों को बताती है । चित्त के संस्कार हाथ की रेखाओं में समय-समय पर उभरते रहते हैं, कर्मों की, संस्कारों की संरचना में हम जीते हैं । वो हाथ-पैर, चेहरे पर प्रकट होते रहते हैं । हाथ की रेखा क्यों आदमी मस्तिष्क पढ करके बता देता है, तलुए को पढकर बता देता है । जो संस्कार प्रकट हो रहे हैं उनके सूक्ष्म चिन्ह उस जगह पहले आ जाते हैं, घटनाक्रम बाद में आते हैं । दुर्घटना की रेखा पहले आ जाएगी, दुर्घटना बाद में घटित होगी ।

प्रश्न- अगर हाथ में रेखा न हो तो क्या होगा ?

उत्तर - नहीं होगा तो आदमी संस्कारशून्य होगा, पर ऐसा सम्भव नहीं है । संस्कार नहीं होगा तो जीवन ही नहीं होगा।

प्रश्न- कोई इन्सान अपने नसीब को कैसे मिटा यानि बदल सकता है ?

उत्तर - नसीब को तपबल से बदला जा सकता है । कठिन तपबल हो तो अच्छा नसीब आएगा, बुरा जाएगा।

प्रश्न- हमारे अन्दर इच्छा क्यों होती है ?

उत्तर - इच्छा आती है संस्कार के कारण, जैसा संस्कार वैसी इच्छा।

अप्रैल माह की गतिविधियाँ

दिनांक 05 अप्रैल 2026, रविवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संचालित करते हुए हरीश कुमार जायसवाल

परिजनों को संबोधित करते हुए दिनकर सर और धीरज सर

परिजनों को संबोधित करती हुई चंदा मैडम

उपस्थित विद्यार्थी गण एवं प्रबुद्ध जन

दिनांक 12 अप्रैल 2026 को गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री हरीश जायसवाल जी द्वारा किया गया, जिनके मार्गदर्शन में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों को समझा। सत्र का मुख्य उद्देश्य युवाओं एवं समाज के लोगों में सकारात्मक सोच, नैतिक मूल्यों और आत्मविश्वास का विकास करना था। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं के रूप में श्री सौरव प्रकाश (आई टी प्रोफेशनल मुंबई), प्रिया श्रेष्ठ,(इंजीनियर, मुंबई), श्री धीरज जी (शिक्षक) और सुश्री मनीषा जी ने जीवन में अनुशासन, समय प्रबंधन, एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि व्यक्तित्व का विकास केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि आंतरिक गुणों जैसे - विचार, व्यवहार और संस्कारों से होता है। उपस्थित लोगों को प्रेरित करते हुए यह भी कहा गया कि नियमित साधना, स्वाध्याय और सेवा भाव से व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर बना सकता है। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सदस्यगण और बड़ी संख्या में स्थानीय श्रद्धालु उपस्थित रहे। जिन्होंने पूरे उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। अंत में कार्यक्रम का समापन शांति पाठ के साथ किया गया ।

मनीषा दीदी जी

धीरज भैया जी

हरीश भैया जी

भूखे को भोजन करा कर ख़ुद को भी तृप्त करता गायत्री परिवार, सहरसा

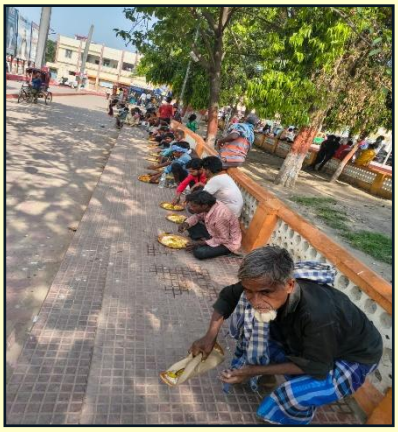

हर रोज की तरह आज भी देवजनों के बीच भोजन प्रसाद वितरण करता गायत्री परिवार, सहरसा...

शांतिकुंज, हरिद्वार के प्रतिनिधि आदरणीय इंद्रदेव पंडित, घनश्याम देवांगन और गणेश पवार बाबूजी का स्वागत करते जिला संयोजक श्री ललन सिंह जी....

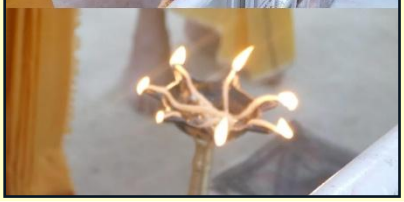

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते शांतिकुंज प्रतिनिधि...

मंच का संचालन करते श्री हरीश कुमार जायसवाल ...

सहरसा उपजोन की मीटिंग को संबोधित करते आदरणीय डॉ अरुण कुमार जायसवाल...

संबोधित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि गण...

विभिन्न जिलों और प्रखंडों से आए हुए परिजन, मुख्य ट्रस्टी एवं संयोजकगण...

भोजन प्रसाद खिलाने और खाने का आनंद लेते परिजन...

सोहा ग्राम, सहरसा में गायत्री महायज्ञ के निमित्त होने वाले मंगल कलश शोभा यात्रा का विहंगम दृश्य...

सायंकालीन युग संगीत, प्रवचन

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के द्वारा दिनांक 19-4-2026 को कुरहा, बेगूसराय में गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा एवं विराट गायत्री महा यज्ञ के निमित्त मंगल कलश शोभा यात्रा संपन्न...

गायत्री कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान में आज दिनांक 19/04/2026 को नए सत्र के छात्र-छात्राओं के ज्ञानदीक्षा के साथ साथ पुराने छात्र-छात्राओं का दीक्षांत समारोह मनाया गया...जिसमें मलेशिया में रहने वाले प्रशांत जायसवाल एवं चेन्नई के विनीत साबू के द्वारा सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों में से प्रथम, द्वितीय, तृतीय टॉपर को उपहार स्वरूप लैपटॉप प्रदान किया गया और अलग अलग विषय के अनुसार अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों को स्मार्ट घड़ी से भी सम्मानित किया गया और छात्र छात्राओं को प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया...

पुरस्कार पाते छात्र-छात्राएं- प्रथम टॉपर:- प्रिंस कुमार, द्वितीय टॉपर:- मुस्कान कुमारी, तृतीय टॉपर:- अतुल कुमार

मंच का संचालन करते हरीश कुमार जायसवाल

कार्यक्रम को संबोधित करते आदरणीय डॉ श्री अरुण कुमार जायसवाल

कंप्यूटर क्लास की जानकारी देते विभिन्न विषय के शिक्षकगण...

मुख्य अतिथि के रूप में अपना वक्तव्य देतीं अतिरिक्त जिला जज रंजुला भारती, डॉ कल्याणी सिंह और कैप्टन गौतम सर...

पुरस्कार स्वरूप स्मार्ट घड़ी पाते विद्यार्थिगण

अपने अनुभव बताते हुए टॉपरों ने कहा कि...वे शक्तिपीठ पर्सन बन कर आएं थे और पर्सनैलिटी ले कर जा रहे है...

दीक्षांत समारोह में उपस्थित छात्र-छात्रागण

कार्यक्रम में उपस्थित नए सत्र की छात्र-छात्राएं

नामकरण संस्कार के दौरान पिता मुकुंद कुमार के द्वारा बच्चे को डॉक्टर कल्याणी सिंह को बाल प्रबोधन के लिए शिशु को गोद में देते

गायत्री मंत्र की दीक्षा लेते गायत्री कंप्यूटर संस्थान की निवृतमान छात्र- छात्रा...

भोजन प्रसाद पाते छात्र-छात्राएं एवं अभिभावक...

गायत्री शक्ति पीठ, सहरसा के द्वारा संचालित, बेलदौर, खगड़िया में गायत्री महा यज्ञ के निमित्त मंगल कलश शोभा यात्रा ...

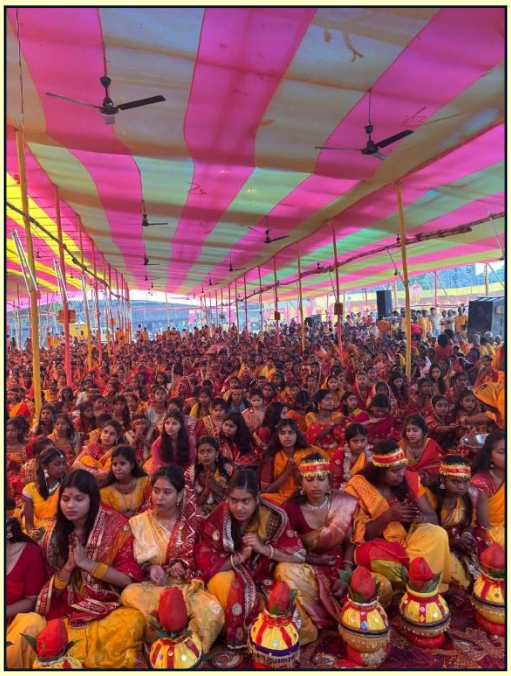

गृहे गृहे गायत्री यज्ञ

प्रकृति की रक्षा, सबकी सुरक्षा

दीवार लेखन करते हुए युवा मंडल

24 घरों में प्रत्येक महीने के अंतिम रविवार को सुदूर गाँव में 24 नए घरों में गायत्री यज्ञ के पावन संकल्प को पूर्ण करती युवती मंडल एवं महिला मंडल

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

सोहा में गायत्री महायज्ञ को लेकर तैयारी पूरी

सोनवर्षा राज/सहरसा/सं। सोनवर्षा नगर क्षेत्र के सोहा गांव में 16 अप्रैल से तीन दिवसीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। आयोजन को लेकर सभी तैयारियां लगभग पूरी कर ली गई हैं। यज्ञ स्थल पर श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए विशाल पंडाल, आकर्षक तोरण द्वार, बेहतर रोशनी, स्वच्छ पेयजल और अस्थायी शौचालय की व्यवस्था की गई है। महायज्ञ के संयोजक डॉ. अरुण कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि 16 अप्रैल को सुबह 9 बजे भव्य कलश यात्रा के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ होगा। इस कलश यात्रा में सैकड़ों महिलाएं और कन्याएं पारंपरिक वेशभूषा में शामिल होकर वातावरण को भक्तिमय बनाएंगी। वहीं शाम 5 बजे से युग संगीत एवं युग ऋषि के अमृत संदेश का वाचन किया जाएगा। 17 अप्रैल को सुबह 7 बजे से 7:45 बजे तक सामूहिक जप, ध्यान, प्रज्ञा योग एवं व्यायाम का आयोजन होगा। इसके बाद सुबह 8:30 बजे से 11 बजे तक देव पूजन, गायत्री महायज्ञ और विभिन्न संस्कार संपन्न कराए जाएंगे। महायज्ञ के अंतिम दिन 18 अप्रैल को भी सुबह 7 बजे से 7:45 बजे तक सामूहिक जप, ध्यान एवं योग होगा। इसके उपरांत सुबह 8:45 बजे से 11 बजे तक गायत्री महायज्ञ, विभिन्न संस्कार तथा गायत्री मंत्र की दीक्षा दी जाएगी। शाम 5 बजे युग संगीत, अमृत संदेश वाचन, दीप महायज्ञ और पूणार्हुति के साथ कार्यक्रम का समापन होगा तथा संतों को विदाई दी जाएगी।

10:43 pm

तीन दिवसीय गायत्री महायज्ञ शुरू, कलश यात्रा से माहौल भक्तिमय

सोनवर्षा राज/सहरसा/सं.। नगर क्षेत्र के सोहा गांव में गुरुवार को तीन दिवसीय गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ भव्य कलश यात्रा के साथ हुआ। सैकड़ों महिलाओं और कन्याओं ने तिलावे नदी से वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच कलश में जल भरकर पूरे गांव का भ्रमण किया और यज्ञ स्थल पर स्थापित किया। कलश स्थापना के बाद विधिवत आरती की गई, वहीं ढोल-नगाड़ों और जय श्रीराम के उद्घोष से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। आयोजक डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि 17 अप्रैल को सुबह सामूहिक जप, ध्यान, प्रज्ञा योग व व्यायाम के बाद देव पूजन, गायत्री महायज्ञ एवं विभिन्न संस्कार आयोजित होंगे। शाम में युग संगीत और अमृत संदेश का वाचन किया जाएगा। महायज्ञ के अंतिम दिन 18 अप्रैल को जप-ध्यान, योग, महायज्ञ, संस्कार एवं गायत्री मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम होगा। शाम में दीप महायज्ञ, पूणार्हुति और संतों की विदाई के साथ आयोजन संपन्न होगा। हरिद्वार से आए पंडितों द्वारा सभी संस्कार निःशुल्क कराए जा रहे हैं।

5:47 am

दुखों से मुक्त करता है ज्ञान : डा . अरूण

भागलपुर 20 अप्रैल, 2026 दैनिक जागरण 5

संवाद सूत्र, जागरण, सहरसा: शहर के गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को दीक्षांत समारोह एवं ज्ञानदीक्षा समारोह हुआ। जिसमें गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के प्रशिक्षुओं का दीक्षांत समारोह एवं नये सत्र के प्रशिक्षुओं का दीक्षारंभ संस्कार हुआ। शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्वलन एडीजे रंजुला भारती, डा. कल्याणी सिंह, अनुजा, सिंडिकेट सदस्य मेजर गौतम कुमार, उमा जायसवाल एवं जिला संयोजक ललन कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि ज्ञान ही हमें सभी दुःखों से मुक्त करता है। सबसे बड़ा दुःख अज्ञान, अभाव, आशक्ति है। इसलिए ईसान को ज्ञान की जरूरत है। भारतीय संस्कृति में इस प्रकार का आयोजन है। उन्होंने कहा कि ज्ञान दीक्षा का मतलब ज्ञान का आरम्भ होता है।

लैपटाप व प्रमाण पत्र के साथ छात्र- छात्राएं व अतिथिगण।

इस अवसर पर पुराने बैच के शिक्षार्थी का दीक्षान्त समारोह हुआ। इस अवसर पर एडीजे रंजुला भारती ने कहा कि यह सौभाग्य की बात इतना सुन्दर व्याख्यान एवं वातावरण देखने सुनने को मिला। जिसका श्रेय अरूण जायसवाल को जाता है। कल्याणी सिंह ने कहा हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता, अहिंसा एवं सबका सम्मान है। इस अवसर पर गायत्री मंत्र की दीक्षा एवं नामकरण संस्कार सम्पन्न हुआ। इस मौके पर कंप्यूटर शिक्षण संस्थान ने परीक्षा में प्रथम स्थान पाने वाले प्रिंस कुमार, द्वितीय स्थान मुस्कान कुमारी तथा तृतीय स्थान पाने वाले अतुल कुमार को उपहार स्वरूप एक-एक लैपटाप दिया गया। इसके साथ ही 10 छात्र, छात्राओं को सांत्वना पुरस्कार स्मार्ट वाच उपहार स्वरूप दिया गया। पीडीसी दिव्यांशु कुमार, जीके जीएस के सत्यम कुमार, इंग्लिश के सुष्मिता कुमारी, प्रैक्टिकल के अशोक कुमार, कंप्यूटर के साधना भारती, अटेंडेंस आर्य कुमारी, ममता कुमारी, विष्णु कुमार इन सभी को स्मार्ट वाच उपहार स्वरूप दिया गया।

मलेशिया में कार्यरत सीईओ प्रशांत जायसवाल के सौजन्य से यह उपहार छात्र-छात्राओं को दिया गया। इस अवसर पर सभी गायत्री परिजन के अलावे विभिन्न स्कूल के बच्चे एवं अभिभावक तथा सभी गायत्री परिजन उपस्थित थे। इसके साथ ही, कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक हरीश जायसवाल, समरकान्त झा, मार्कण्डेय उपस्थित थे। मालूम हो कि गायत्री शक्तिपीठ में मात्र 100 रुपए शुल्क के साथ प्रशिक्षण दिया जाता है।

मानव का सबसे बड़ा दुख अज्ञान अभाव व आशक्ति: डॉ अरूण

- गायत्री शक्तिपीठ में दीक्षांत समारोह एवं ज्ञानदीक्षा समारोह का हुआ आयोजन

प्रतिनिधि, सहरसा

सफल बच्चे को सम्मानित करते अतिथि .

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को दीक्षांत समारोह एवं ज्ञानदीक्षा समारोह का आयोजन किया गया. जिसमें गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के प्रशिक्षुओं का दीक्षांत समारोह एवं नये सत्र के प्रशिशुओं का दीक्षारंभ संस्कार हुआ. कार्यक्रम का शुभारनभ दीप प्रज्वलन के साथ किया गया. दीप प्रज्वलन डॉ कल्याणी सिंह, जिला न्यायधीश, रंजुला भारती, अनुजा जी, गौतम जी सिंडिकेट सदस्य, उमा जायसवाल एवं जिला संयोजक ललन कुमार सिंह ने किया. इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि ज्ञान ही हमें सभी दुःखों से मुक्त करता है. सबसे बड़ा दुःख अज्ञान, अभाव, आशक्ति है. इसलिए ईसान को ज्ञान की जरूरत है. भारतीय संस्कृति में इस प्रकार का आयोजन है. उन्होंने कहा कि ज्ञान दीक्षा का मतलब ज्ञान का आरंभ होता है. इस अवसर पर पुराने बैच के शिक्षार्थी का दीक्षांत समारोह हुआ. इस अवसर पर जिला जज रंजुला भारती ने कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि इतना सुंदर व्याख्यान एवं वातावरण देखने सुनने को मिला. जिसका श्रेय जायसवाल जी को जाता है. डॉ कल्याणी सिंह ने कहा कि हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता अहिंसा एवं सबका सम्मान है. इस अवसर पर गायत्री मंत्र की दीक्षा एवं नामकरण संस्कार सम्पन्न हुआ. इस अवसर पर कम्प्युर शिक्षण संस्थान ने परीक्षा में प्रथम स्थान पाने वाले प्रिंस कुमार, द्वितीय स्थान पर रही मुस्कान कुमारी एवं तृतीय स्थान पर रहे अतुल कुमार को उपहार स्वरूप एक-एक कर लैपटॉप दिया गया. इसके साथ ही 10 छात्र, छात्राओं को सांत्वना पुरस्कार के रूप में स्मार्ट वाच उपहार स्वरूप दिया गया. पीडीसी दिव्यांशु कुमार, जीके जीएस के सत्यम कुमार, इंग्लिश के सुष्मिता कुमारी, प्रैक्टिकल के अशोक कुमार, कंप्यूटर के साधना भारती, अटेंडेंस आर्य कुमारी ममता कुमारी, विष्णु कुमार को स्मार्ट वाच उपहार स्वरूप दिया गया. प्रशांत जायसवाल सीईओ मलेशिया के सौजन्य से ये उपहार दिया गया. इस अवसर पर सभी गायत्री परिजन के अलावे विभिन्न स्कूल के बच्चे, अविभावक एवं सभी गायत्री परिजन मौजूद थे. इसके साथ ही कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक हरिश जायसवाल, समरकांत झा, मार्कण्डेय मौजूद थे. ज्ञातव्य हो कि गायत्री शक्तिपीठ में मात्र एक सौ रुपये शुल्क के साथ प्रशिक्षण दिया जाता है.

गायत्री शक्तिपीठ में कम्प्यूटर शिक्षार्थी के बीच लैपटाप वितरण कार्यक्रम आयोजित

दैनिक अयोध्या टाइम्स

अजय कुमार, सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत दीक्षांत समारोह एवं ज्ञानदीक्षा समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के प्रशिक्षुओ का दीक्षान्त समारोह एवं नये सत्र के प्रशिशुओं का दीक्षारंभ संस्कार हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्वलन –डाक्टर कल्याणी सिंह, जिला व्यायाधीश, रंजुवा भारती, अनुजा,गौतम सिंडिकेट, उमा जायसवाल एवं जिला संयोजक ललनकुमार सिंह ने किया।इस अवसर पर डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि ज्ञान हीं हमें सभी दुःखों से मुक्त करता है। सबसे बड़ा दुःख अज्ञान, अभाव,आशक्ति है। इसलिए ईन्सान को ज्ञान की जरूरत है।भारतीय संस्कृति में इस प्रकार का आयोजन है।उन्होंने कहा– ज्ञान दीक्षा का मतलब ज्ञानका आरम्भ होता है।

इस अवसर पुराने बैच के शिक्षार्थी का दीक्षान्त समारोह हुआ।इस अवसर पर जिला जज रंजुला भारती ने कहा यह सौभाग्य की बात इतना सुन्दर व्याख्यान एवं वातावरण देखने व सुनने को मिला जिसका श्रेय जायसवाल साहब को जाता है। डा कल्याणी सिंह ने कहा हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता, अहिंसा एवं सबका सम्मान है।

इस अवसर पर गायत्री मंत्र की दीक्षा एवं नामकरण संस्कार सम्पन्न हुआ।इस अवसर पर कम्प्युर शिक्षण संस्थान ने शिक्षा में प्रथम, प्रिंसकुमार, द्वितीय, मुस्कान कुमारी तथा तृतिय स्थान पाने वाले शिक्षार्थी अतुल कुमार को उपहार स्वरूप एक–एक कर लैप दिया गया।इसके साथ ही 10 शिक्षार्थी को कन्डोलेंस पुरस्कार स्मार्ट वाच उपहार स्वरूप दिया गया।इस अवसर पर सभी गायत्री परिजन, के अलावे विभिन्न स्कूल के बच्चे एवं अविभावक तथा सभी गायत्री परिजन उपस्थित थे।इसके साथ ही, कम्प्युटर शिक्षणसंस्थान के शिक्षक हरिश जायसवाल समरकान्त झा मार्कण्डेय उपस्थित थे।ज्ञात हो कि गायत्री शक्तिपीठ मेंमात्र 100 रुपए शुल्क के साथ प्रशिक्षण दिया जाता है।

ज्ञान ही हमें सभी दुखों से मुक्त करता है : डॉ. अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा समारोह का आयोजन, नव प्रशिक्षुओं का शिक्षारंभ

भास्कर न्यूज | सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को दीक्षांत समारोह एवं ज्ञान दीक्षा समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के प्रशिक्षुओं का दीक्षांत समारोह एवं नये सत्र के प्रशिक्षुओं का शिक्षारंभ संस्कार हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रसिद्ध चिकित्सक डा. कल्याणी सिंह, जिला न्यायधीश, रंजुला भारती, अनुजा , सिंडिकेट सदस्य गौतम कुमार , उमा जायसवाल एवं जिला संयोजक ललन कुमार सिंह ने किया।

छात्रों के लैपटॉप के साथ प्रशस्तिपत्र देते हुए अतिथि।

स अवसर पर डा. अरुण कुमार ायसवाल ने कहा कि ज्ञान ही हमें सभी दुखों से मुक्त करता है। सबसे बड़ा दुःख अज्ञान, अभाव, आसक्ति है। इसलिए इंसान को ज्ञान की जरूरत है।

इस अवसर पर पुराने बैच के शिक्षार्थी का दीक्षान्त समारोह हुआ। इस अवसर पर जिला जज रंजुला भारती ने कहा यह सौभाग्य की बात इतना सुन्दर व्याख्यान व वातावरण देखने सुनने को मिला जिसका श्रेय आयोजक को जाता है। डा. कल्याणी सिंह ने कहा हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता, अहिंसा एवं सबका सम्मान है। इस अवसर पर गायत्री मंत्र की दीक्षा एवं नामकरण संस्कार सम्पन्न हुआ।

प्रथम,स्थान पाने वाले प्रिंस कुमार, द्वितीय, स्थान पर रही मुस्कान कुमारी तथा तृतीय स्थान पाने वाले अतुल कुमार को उपहार स्वरूप एक-एक लैपटॉप दिया गया। इसके साथ ही 10 छात्र, छात्राओं को कंडोलेंस पुरस्कार स्मार्ट वाच उपहार स्वरूप दिया गया। मलेशिया में एक कंपनी के सीओ प्रशांत जायसवाल के सौजन्य से ये उपहार दिए गए । इस अवसर पर विभिन्न स्कूल के बच्चे एवं अभिभावक व संस्थान के शिक्षक हरिश जायसवाल, समरकान्त झा थे।

सहरसा जागरण

24.0 सूर्य अस्त (आज) 06:06 उदय (कल) 05:20 आर्द्रता 65% 48% अधिकतम न्यूनतम

कोर्ट का अनोखा फैसला : गायत्री मंदिर में सेवा की शर्त पर जमानत

- सप्ताह में पांच दिन करनी होगी सेवा, ट्रस्ट से लेंगे प्रमाण पत्र
- एडीजे चतुर्थ अविनाश कुमार के न्यायालय ने दी जमानत

जास, सहरसा : सहरसा के अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश चतुर्थ ने एक अनोखा फैसला सुनाते हुए आरोपी को जमानत दी है। एडीजे चतुर्थ अविनाश कुमार ने अग्रिम जमानत की अर्जी स्वीकार करते हुए पांच महीने तक गायत्री मंदिर में सामुदायिक सेवा का फैसला सुनाया है। फैसले के अनुसार युवक को सप्ताह के पांच दिन मंदिर में सेवा देनी होगी। साथ ही इस बात का प्रमाण पत्र मंदिर के ट्रस्टी या प्रधान पुजारी से प्राप्त करना होगा। ऐसा नहीं करने पर जमानत रद कर दी जाएगी।

दरअसल, सदर थाना में दर्ज कांड संख्या 169/2026 में बंटी कुमार और बीना देवी ने अग्रिम जमानत के लिए एडीजे चतुर्थ के न्यायालय में अधिवक्ता के माध्यम से अपील की। जिसमें बीना देवी और बंटी कुमार पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था। आरोप के अनुसार, 15 फरवरी 2026 को एक विवाह समारोह के दौरान विवाद उत्पन्न हुआ और 13 फरवरी 2026 की रात पंचायत के दौरान मारपीट की घटना सामने आई, जिसमें राजो अहमद को सिर में चोट लगी।

सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष ने चोट की पुष्टि करते हुए बताया कि घायल को कठोर एवं कुंद वस्तु से चोट लगी है। वहीं बचाव पक्ष ने तर्क दिया कि मामले में बंटी कुमार द्वारा उपद्रव करने का कोई ठोस साक्ष्य केस डायरी में उपलब्ध नहीं है। न्यायालय द्वारा केस डायरी और गवाहों के बयानों के अवलोकन में पाया गया कि अधिकांश गवाहों ने चोट पहुंचाने का आरोप सह-अभियुक्त विवेक कुमार पर लगाया है। साथ ही बीना देवी की भूमिका सीमित पाई गई और बंटी कुमार द्वारा चोट पहुंचाने के स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिले। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए न्यायालय ने बीना देवी एवं बंटी कुमार की अग्रिम जमानत याचिका स्वीकार करते हुए आदेश दिया कि गिरफ्तारी या आत्मसमर्पण की स्थिति में दोनों अभियुक्तों को चार सप्ताह के भीतर 10,000 के दो जमानतदारों पर रिहा किया जाए। इसके अतिरिक्त न्यायालय ने बंटी कुमार को निर्देश दिया है कि वे भविष्य में सूचक पक्ष के पारिवारिक जीवन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप या व्यवधान उत्पन्न न करें। विशेष शर्त के तहत न्यायालय ने बंटी कुमार को सहरसा स्थित गायत्री मंदिर में अगले पांच महीनों तक प्रति सप्ताह पांच दिन, प्रतिदिन दो घंटे सामुदायिक सेवा करने का निर्देश दिया है। प्रत्येक माह सेवा पूर्ण होने पर मंदिर के मुख्य पुजारी या ट्रस्टी से प्रमाण पत्र प्राप्त कर न्यायालय में प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। उक्त आदेश के साथ न्यायालय ने जमानत याचिका का निस्तारण कर दिया।

हमले के आरोपी को पांच माह सेवा दान का आदेश

सहरसा, विधि संवाददाता। जानलेवा हमला करने वाले आरोपी को सहरसा स्थित गायत्री शक्तिपीठ में सेवादान देने का आदेश अपर जिला जज अविनाश कुमार ने दिया है।

यह निर्णय अदालत ने अग्रिम जमानत याचिका 258/2026 की सुनवाई के बाद किया है। अदालत ने सहरसा बस्ती निवासी याचिकाकर्ता बीना देवी एवं बंटी कुमार को गायत्री शक्तिपीठ में प्रत्येक सप्ताह के पांच दिन दो घंटे का सेवा दान लगातार पांच महीने तक करने आदेश देते हुए जमानत दिया। सहरसा थाना कांड 169/2026 की सूचिका ने आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर बताया कि उसकी पुत्री की शादी के माहौल में आरोपियों ने शोर शराबा कर लाठी खंती से जानलेवा हमला किया। हमले में मोहम्मद रज्जी अहमद को सिर पर गंभीर चोटें लगी।

अदालत ने अपने निर्णय में आरोपियों को आदेशित किया है कि पांच महीने सेवा दान करने के बाद मुख्य पुजारी या ट्रस्टी से प्रमाणपत्र प्राप्त कर अदालत को उपलब्ध कराएं।

पॉक्सो के दो मामले में न्यायालय ने लगाया अर्थदंड

सहरसा, विधिसंवाददाता। विशेष न्यायाधीश पोक्सो राकेश कुमार राकेश की अदालत ने दो मामलो में फैसला सुनाया । पोक्सो 29/21 के आरोपी सोरबाजार थाना क्षेत्र पहाड़पुर राजीव यादव को चेतावनी देते हुए दस हजार का अर्थदंड लगाया अदालत ने कहा अर्थ दंड की राशि नहीं देने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी । इस मामले में आरोपी को भादवि की धारा 504,323 में दोषी पाया गया । वहीं एक अन्य पोक्सो केस 29/22 के आरोपी नवहट्टा के चंद्रायन निवासी कृष्ण मोहन यादव को अदालत ने धारा 341,323 में दोषी पाकर दस हजार का अर्थदंड लगाया है। अदाल ने कहा है अर्थदंड की राशि नही देने पर आरोपी की संपति से वसूल की जाएगी ज पीड़िता को दी जाएगी । दोनो मामले की सुनवाई में विशेष लोक अभियोजक पोक्स शिवेंद्र प्रसाद ने अभियोजन पक्ष से गवाह प्रस्तुतकिया । सूचक के मुकर जाने के कारण पोक्सो की धारा में आरोपी के विरुद्ध साक्ष्य उपलब्ध नही हुआ ।

पाद संचालन

परिचय :-

पाद संचालन (Pad Sanchalan) या साइक्लिंग पोज़ एक योगासन है, जिसमें लेटकर हवा में पैरों से साइकिल चलाने जैसी क्रिया की जाती है। यह पेट की मांसपेशियों, कमर के निचले हिस्से और घुटनों को मजबूत बनाता है, पाचन में सुधार करता है, और कूल्हों के जोड़ों में लचीलापन बढ़ाता है। यह 20-25 बार क्लॉकवाइज और एंटी-क्लॉकवाइज किया जा सकता है।

पाद संचालन करने की विधि :-

प्रारंभिक स्थिति: पीठ के बल सीधे लेट जाएं, पैर सीधे और हाथ शरीर के पास हों।

एक पाद संचालन :- सांस भरते हुए दाएं पैर को ऊपर उठाएं, फिर गोल घुमाते हुए (साइकिल चलाते हुए) वापस नीचे लाएं। यही प्रक्रिया बाएं पैर से भी दोहराएं।

द्विपाद संचालन :- दोनों पैरों को एक साथ मिलाकर, घुटनों से मोड़कर पेट की तरफ लाएं और हवा में साइकिल चलाने जैसा घुमाएं।

लयबद्ध द्विपाद संचालन :- दोनों पैर से एक साथ लयबद्ध तरीके से गोल-गोल घुमाएं।

विश्राम - अंत में, शवासन में लेटकर शरीर को आराम दें।

पाद संचालन के प्रमुख लाभ :-

मजबूती :- पेट की मांसपेशियों और पीठ के निचले हिस्से को मजबूत करता है।

पाचन :- यह पाचन तंत्र को मजबूत करता है और पेट की अतिरिक्त चर्बी कम करने में सहायक है।

लचीलापन :- कूल्हों और घुटनों के जोड़ों में लचीलापन और गतिशीलता बढ़ाता है।

तनाव में कमी :- यह आसन कमर के जोड़ों में तनाव को कम करता है।

सावधानियां :-

गंभीर पीठ दर्द, हर्निया या हाई ब्लड प्रेशर वाले लोगों को योग प्रशिक्षक की सलाह के बिना यह आसन नहीं करना चाहिए।

अप्रैल माह में इन गणमान्य अतिथियों ने पांच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में सम्मिलित रूप से भाग लिया:–

- सौरव प्रकाश (आई टी प्रोफेशनल, मुंबई) - पांच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- प्रिया श्रेष्ठ (इंजीनियर, मुंबई) - पांच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- नलिनी प्रभा (मुंबई) - पांच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- डॉक्टर कल्याणी सिंह (स्त्री रोग विशेषज्ञ, लॉर्ड बुद्धा कोशी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल चेयरमैन, सहरसा) - प्राकृतिक चिकित्सा, साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं ज्ञान दीक्षा में भाग लिया।
- रंजुला भारती (जिला न्यायाधीश, सहरसा) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं ज्ञान दीक्षा में भाग लिया।
- अनुजा जी (मुम्बई) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं ज्ञान दीक्षा में भाग लिया।
- मेजर गौतम कुमार (सिंडिकेट मेम्बर, सहरसा) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं ज्ञान दीक्षा में भाग लिया।
- शशांक कुमार (न्यायाधीश, मधेपुरा) - प्राकृतिक चिकित्सा में भाग लिया।
- रामप्रकाश कुमार (प्रॉसिक्यूटर, सहरसा) - प्राकृतिक चिकित्सा में भाग लिया।
- आदर्श किशोर (प्रॉसिक्यूटर, सहरसा) - प्राकृतिक चिकित्सा में भाग लिया।
- ललितेश्वर चौधरी (सेवा निवृत ब्रिगेडियर, लखनऊ) - प्राकृतिक चिकित्सा में भाग लिया।

आगामी कार्यक्रम

03 मई - विशेष भोजन

14 मई - प्रदोष व्रत

26 मई - गायत्री जयंती, गंगा दशहरा

28 मई - प्रदोष व्रत

अंतिम रविवार - 24 घरों में गायत्री यज्ञ

प्रत्येक रविवार - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र

कौन है युवा

युवा कौन है यह प्रश्न उठे अगर मन में
तो उत्तर समझना कुछ इस तरह, एक वही है युवा -----
जिसमें संयम हो, धैर्य हो, जिसमें न आलस्य हो, न प्रमाद हो
जिसमें तप-त्याग का भाव हो, जिसमें विवेक की पतवार हो ।। एक वही है युवा ----
जिसकी भुजाओं में शौर्य हो, जिसकी वाणी में गाम्भीर्य हो
जिसमें सत्य हो, प्रेम हो, जो सद्गुणों का आगार हो ।। एक वही है युवा ----
जिसकी आँखों में हो चमक, जिसके चेहरे पर हो दमक
जिसके रक्त में उबाल हो, जिसके खून में धार हो । एक वही है युवा -----
जिसके व्यक्तित्व में तेज हो, जिसके कृतित्व में पावनता हो
जिसके संकल्प में फौलाद हो, जिसके मन में स्थिरता हो ।। एक वही है युवा ----
जिसमें स्वयं को जानने हेतु, गुरु चरणों की कसक हो
जिसमें श्रद्धा हो, विश्वास हो, कुछ कर गुजरने की ललक हो ।। एक वही है युवा ----
जिसमें अपने मन के शृँगार की, भूख हो, प्यास हो
जिसका मस्तक सदैव ही, ईश्वर के चरणों में नत हो ।। एक वही है युवा ---
कर्म और कर्मफल विधान की, जिसमें अपूर्व समझ हो
तदनुसार शुभ कर्म हों, सजल भावों से युक्त हृदय हो ।। एक वही है युवा ----
जिसकी भावना में परमेश्वर हों, जिसकी कामना में लोक सेवा हो
जिसकी कल्पना में उड़ान हो, जिसमें निर्माण का तूफान हो ।। एक वही है युवा -----
जिसमें भक्ति हो, ज्ञान हो, निष्काम कर्म की आग हो
जिसमें त्रिवेणी हो तीनों की, जिसमें शिवोऽहं का गुँजार हो ।। एक वही है युवा ---
युवा है वह नहीं, जिसने ओढ रखी हो दीनता, हीनता
युवा तो है एक वही, जिसकी हो क्षुद्रता से महानता की एक पावन यात्रा ।। एक वही है युवा -------

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	:	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA** **https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39** **https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en** **https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en** **https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/**